आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्त बीसवीं शताब्दी के हिंदी के प्रथम साहित्यिक इतिहास लेखक थे | कोश-निर्माण, इतिहास-लेखन, निबंध-रचना, काव्य-समीक्षा, अनुवाद, सम्पादन, भाषा-परिमार्जन, शैली-संरचना तथा हिंदी के आलोचना शास्त्र को सामाजिक दायित्व से जोड़कर विकसित करने के क्षेत्र में उन्होंने उल्लेखनीय एवं चिरस्मरणीय कार्य किया है | उनका जन्म 4 अक्तूबर, 1884 में ग्राम अगौना जिला बस्ती, उत्तर प्रदेश में हुआ था | उनके पिता पं. चन्द्र बली शुक्ल कानूनगो थे | उनके पिता ने शिक्षा के क्षेत्र में उन पर उर्दू और अंग्रेजी पढ़ने के लिए जोर दिया | लेकिन पिता की आंख बचाकर वे हिंदी भी पढ़ते रहे | यहीं पर उन्होंने जुबली स्कूल से वर्ष 1892 में मिडिल परीक्षा और वर्ष 1901 में लंदन मिशन स्कूल से हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की |

हिंदी में पाठ आधारित वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात उन्हीं के द्वारा हुआ | हिंदी निबंध के क्षेत्र में भी शुक्ल जी का महत्वपूर्ण योगदान है | रामचन्द्र शुक्ल वर्ष 1903 में आनन्द-कादम्बिनी नामक पत्रिका के संपादक हुए | वर्ष 1904 में उन्हें नायब तहसीलदारी के लिए नामित किया गया किन्तु उन्होंने उस पद को स्वीकार नहीं किया वे लन्दन मिशन स्कूल मिर्जापुर में अध्यापक नियुक्त हुए |

वर्ष 1909 से 1910 के लगभग वे हिंदी शब्द सागर के संपादन के लिए काशी आए | यही पर काशी नागरी प्रचारिणी सभा के लिए कार्य किया | कोश का कार्य समाप्त करने के बाद उनकी नियुक्ति काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक के रूप में हुई | वर्ष 1937 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए |

हिंदी में गद्य शैली के सर्वश्रेष्ठ प्रस्थापकों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का नाम सर्वोपरि है | उनकी शैली के विषय में डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त जी ने लिखा है, "निबंधकार शुक्ल जी की शैली में भी निजी विशिष्टता मिलती है | भारतेंदु युग की सी मौलिकता उसमें है किंतु वे उसके छिछलेपन से दूर हैं, द्विवेदी युग की विचारात्मकता उसमें है, किंतु वैसी शुष्कता का अभाव है | विचारों की गंभीर घाटियों के बीच-बीच में उतरी हास्य-व्यंग से ओत-प्रोत उक्तियां किसी साफ-शीतल निर्झर के कोमल कल-कल स्वर की तरह सुनाई पड़ती है |"

उनकी प्रमुख रचनाएं हैं -

ऐतिहासिक	हिंदी साहित्य का इतिहास
समालोचना	काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद (चिंतामणि भाग-दो में संग्रहीत), रस मीमांसा, सूरदास (भ्रमरगीत सार की भूमिका तथा सूर पर अपूर्ण पाण्डुलिपि, जायसी (जायसी ग्रंथावली की भूमिका,) गोस्वामी तुलसीदास (तुलसी ग्रंथावली की भूमिका ।)
काव्य	बुद्ध चरित (लाइट ऑफ एशिया के आधार पर ब्रजभाषा काव्य), मनोहर छटा, हृदय का मधुभार तथा अन्य कविताएं ।
निबंध	मित्रता, अध्ययन, क्रोध ।
अनुवाद	शशांक (बांग्ला उपन्यास), विश्व प्रपंच (अंग्रेजी), राज्य प्रबंध शिक्षा (अंग्रेजी), मेग्स्थनीज का भारतवर्षीय वर्णन (अंग्रेजी), कल्पना का आनंद (अंग्रेजी) के कुछ स्फुट लेखों का अनुवाद ।
संपादन	हिंदी शब्दसागर, सूर, तुलसी, जायसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार, नागरी प्रचारिणी पत्रिका ।

शुक्ल जी को दमा रोग था । 2 फरवरी, 1941 को श्वास के तीव्र दौरों के कारण सहसा हृदयगति रुक जाने से उनका देहांत हो गया ।

.....